दरद होवे लगल आउ झोपड़िया के भीतर तनी इँजोर पसर गेल तब मन मसोस के ऊ उठलक। झोपड़ी के पिछवाड़े जा के निपटलक आउ अग-नग सुँघे लगल।

अँगना में रोपल सीम के उत्तर से टप-टप पानी चू रहल हल। घर के पिछवाड़ा के बँसवाड़ी से पत्ता के सरसराहट आ रहल हल। होन-न-हो कुतिया अपन पिल्लवन के खातिर कोय जतन करे में लगल हे। ई मुँहझौंसा झपसी में नयँ मालूम की हाल हो रहल होत ऊ अँखमुन्ना पिल्लवन सब के।

बिन्दा के मन भेल कि बरतन-बासन कर लेल जाय। लेकिन तुरते मन आलस से भर गेल। ऊ फिन बिछौना भिर लौट आयल।

पोआर पर ओकरा समूचा परिवार गेंदरा में लिपटल सूतल पड़ल हल। हिरवा के बाबू एक पैल खातिर अप्पन आँख जरूर खोललक हल लेकिन जल्दी से मूँड़ी के खूब ऊपर तक गेंदरा तान लेलक आऊ टँगरी जब उघार होवे लगल तऽ ओकरा पेट में समेट के गुड़मुड़िया गेल। बिन्दा अपने जगह पर आयल आउ गोर गेंदरा से झाँप के बइठ गेल। झोपड़िया के पुरबारी तरफ खूब गझिन बँसवाड़ी हल जेकर फुनगियन पर बैठ के ढेर मनी कौव्वन सब काँव-काँव कर रहल हल। लेकिन उनकर सब के आवाज भी एतना थकल-पझायल हल, मानो ऊ सब भी औंघिया रहल हो औ गेंदरा के भीतर घुड़मुड़िया जाये के संदेसा दे रहल हो।

बिंदा बइठल रहल, सुतलक नयँ। हिरवा के माथा पर हाथ फेर के ओकर दुन्नो उघार हो गेल गोर गेंदरा से झाँप देलक। ओकर मन में निरगुन के पंक्ति राग लेवे के कोसिस करे लगल, लेकिन तबहियें मन में अंड-बंड चक्कर मारे लगल। निरगुन के पंक्ति सब कुम्हला के रह गेल।

'जरा ई मरद के तो देखल जाय। कइसन निफिकिर सूतल हे!' बिंदा मने-मने सोचलक हिरवा के बाबू के सूतल देख के। हिरवा के बाबू के आउ देर तक सूतल देखला अच्छा बात नय हे। मलिकार के खरिहान में पहुँचे के पहिले ओकरा पहुँच जाये के चाही। ई बिगड़ल मउसम में काम तो का होयत, मुदा दस कट्ठा के जोत जे हलवाही में देल हे ओकर लाज भी तो रखे के पड़त न ! सौंसे गिरहथ-टोला में मलिकार जइसन एक्को अदमी नयँ हथिन। झुट्ठो-मुट्ठो उनकर गुस्सा हाथ में लेना ठीक बात नयँ हे।

''हिरवा के बाबू कुनमुनायल। आँख मुँदले-मुँदले ऊ खाली अप्पन कान से दुनिया के हेस-नेस लेलक आउ गेंदरा के भूगोल बदल के सिमट गेल। मिजाज तो कर रहल हे कि उठ के जोर से एक झापड़ मारल जाय ई कम अक्किल मेहरारू के। ससुरी, ई झँपसी में भी कोंच रहल हे उट्ठे खातिर! मलिकार के काम के तो एकरा एतना फिकिर लगल हे कि लगऽ हे कि हम्मर मेहरारू नयँ हे, मालिक के ही सतवंती हे। ऊ मने-मने एगो एकदम घिनायल गारी निकासलक आउ गिरह पार लेलक कि चाहे जे हो जाये, पहर भर तो ऊ नहिंए उठत !

हिरवा आउ जोन्ही पहिलके पुकार पर ही अप्पन आँख मटमटयलक। बिंदा जोन्ही के माथा पर हाथ फेरलक तऽ ऊ दुलार से नितरा गेल आउ अप्पन हाथ माय के गोदी में डाल देलक। हिरवा के अचानक कुछ सूझ गेल आउ फुरती से गेंदरा फेंक के उठ खड़ा भेल। लपक के कोना के भूट तक आयल आउ पझायल राख से आलू निकाले लगल।

''भूट सुलगा ले हिरवा।'' बिन्दा बोललक। ऊ हिरवा के चेहरा पर चमक आवे के इन्तजार करे लगल जे आग सुलगावे के हुकुम मिले से आ जाल करऽ हल। अभी कुछ दिन ही भेल हे, ऊ दियासलाई के कांठी रगड़े ला आउ आग जलावे ला सिखलक हे। हिरवा उछाह से भर गेल आउ दियासलाई खोजे लगल। जोन्ही उठ के बिछौना के मुट्ठी भर पोआर ले अइलक। हिरवा ओकरा हुड़कइलक, ''एतना जास्ती पोअरा की होतइ। आधा कर आधा! देख गे मइया, केतना ढेर मनी पोअरा जलावे ला लइलकउ हे।''

''एक्कों काँठी जे खराब होतउ, तब बतइबउ। एतना पोआर से भी नय होतउ। आउ लगतउ। समझलें ?'' जोन्ही जवाब देलक। ई बात पर दुन्नों आपस में उलझ गेल।

बिंदा अप्पन सोच में डूबल हल। दुन्नू के लड़ाई जब खूब तेज भे गेल, तऽ ऊ दुन्नू के डपटलक, ''भोरे-भिनसारे कांय-किच्चिर नयँ कर सब। राम-नाम के बेला में ई मछली-बाजार नयँ पसार। लगइबउ एक-एक झापड़ तऽऽऽ......।

झापड़ के बात सुन के बुतरुन सब सांत भे गेल। हिरवा भूट माने बाँस के जड़ौंधा सुलगा देलक। जोन्ही के कुछ याद आयल। ऊ हिरवा के कान में

(ज) ....

(झ) ....

(ट) ....

(ठ) ....

3. नीचे लिखल सबद से बिसेसन बनावऽ

परकीरती, जोगाड़, हवा, धूरी, साल

4. कहानी में से पाँच गो उपसर्ग चुन के लिखऽ ।

5. नीचे लिखल मुहावरा के अरथ लिखऽ आउ वाक्य में परयोग करऽ ।

टिंगिर-टिंगिर बजना, लहँगा-लुगरी बिकना, गंगालाभ होना, प्रलय होना, रद-बद होना, ठकमुरकी मार देना

योग्यता-विस्तार :

1. दहाड़ पर एगो निबंध लिखऽ ।
2. दहाड़ से बचे के उपाय पर विद्‌यालय में एगो गोस्ठी के आयोजन करऽ ।
3. किसान के दुख-दरद से भरल जीवन से संबंधित कोई एगो कहानी चुन के लावऽ आउ कलास में कहानी पाठ करऽ ।

सब्दार्थ :

टिंगिर-टिंगिर : दाँत किटकिटाय से निकले वाला आवाज

एक सुर : लगातार

हवा मिठाई : एक परकार के हवा मिठाई, जे हवा लगे पर उड़ जा हे

किलयर : साफ

झोरायल : पस्त

गुहार : जोर से आवाज लगाना ।

●

लेखक-परिचय :

नाम : प्रेम कुमार मणि

जनम-तिथि : 25-7-1953

जनम-अस्थान : अनतपुर, अमरपुरा, थाना- नौबतपुर,ज़िला पटना

पेसा : समाज-सेवा, वर्तमान में विधान परिसद के सदस्य

इनकर चर्चित हिन्दी उपन्यास 'ढलान' हे । समकालीन कहानी के ई रास्ट्रीय स्तर पर एगो प्रतिस्ठित कथाकार हथ। इनकर रचना में सोसित, पीड़ित, दलित आउ बंचित वर्ग के दरद आउ पीड़ा से भरल जीवन के जथार्थ चित्रन मिलऽ हे।

जोगाड़ प्रेम कुमार मणि के परसिद्ध कहानी हे। ई कहानी में सोसित वर्ग के दर्दनाक चित्रन भेल हे। जमीन्दार अप्पन मजदूर से कसाई लेखा काम लेवऽ हे बाकि मजदूरी देवे में कनमना हे। गाँव के एगो गरीब परिवार बिन्दा आउ हिरवा केतना मेहनत करऽ हे तइयो खाना-बुतात के 'जोगाड़' करे में एड़ी चोटी के पसेना एक करे पड़ऽ हे। बिन्दा मलकिनी के आठ दिन तक तेल लगउलक तइयो उचित मेहनताना न मिलल। एगो निरधन परिवार के जीवन केतना कस्ट से कटऽ हे, खाना-बुतात के 'जोगाड़' में समय बीत जा हे।

जोगाड़

पूस के महिन्ना, आउ ई झपसी के तीसर दिन हल।

बाप रे बाप! ठंढ नयँ, एकदम से ठार पड़ रहल हल। पोर-पोर तक कनकन्नी समायल हे। नीचे पोआर, ऊपर गेंदरा और कोना में सुलगइत भूट के आँच हे, मुदा ठार हड्डी के भीतर तक छेद रहल हे।

बिंदा करवट बदललक आउ उठे के खातिर साहस बटोरलक। दु घन्टा से कम नयँ भेल होत कि ओकरा पेसाब लगल महसूस हो रहल हल, लेकिन गेंदरा तर के गरमइ से निकसे के साहस नयँ भेल ओकरा। पेसाब रोकले-रोकले जब माथा में

बोललक। हिरवा खूब धेयान से सुनलक आउ अप्पन माय के देखलक। माय अपने में मगन हल। जोन्ही के ऊ एगो आग में पक्कल आलू देलक जेकरा ऊ खूब खुस हो के ले लेलक। फिन ऊ इसारा कर के कुछ बोललक। जोन्ही माय के आँख बचाके बाहर खिसक गेल।

कुछ देर बाद हिरवा उठल आउ मायके आँख बचा के ऊ भी झोपड़ी के बाहर निकस गेल।

बिंदा चुपचाप बइठल रहल। हिरवा के बाबू सुतले-सुतले टोह लेलक कि बुतरुन सब झोपड़ी के बाहर निकल गेल हे। एक बार आँख खोल के गम लेलक फिर हौले से बिंदा के पास अइसे सरक आयल, जइसे ऊ कोय घड़ियाल होय। ऊ बिंदा के अँचरा में अप्पन मुँह रगड़े लगल। ऊ एकदम्मे से भुला गेल कि अभी थोड़ी देर पहले एही जनानी खातिर अप्पन मन में केतना खराब-खराब बात लयलक हल आउ एकरा लात मारे के मन कर रहल हल ओकर।

बिंदा के मन मरद के खातिर नेह से भर गेल। रात में ऊ केतना बार चाहलक हल कि ई मरद अइसहीं दुलार लगावे, लेकिन देवाल दन्ने मुँह कइले एकदम दुस्मन जइसन सुतल रहल रात भर।अब ई भोर-भिनसारे छोह दिखला रहल हे। पहर भर पहिले ई छोह दिखलइते हल तऽ बुतरू बानर के अभी नयँ जगइती हल !

ऊ दुलार से अप्पन मरदाना के माथा सहलयलक आउ मीठ झिड़की देलक, ''भोर हो गेल हे भोर! काम-धाम के फिकिर हे कि नय। घर में खर्चा-खोराकी कुछ नय है!''

''दू पसेरी चाउर एतने दिन में खतम हो गेल का ?''

''बड़ा अइलऽ हे दू पसेरी चाउर के हिसाब रखे वाला! केतना दिन चलतो हे ई चाउर, जोड़लऽ हे? तीन दिनसे झँपसी लगल हे। ओन्ने तोर बहनोई अइलो हल, तीन दिन पहुनइ करके गेलो। एकरो हिसाब नय रखबऽ का ? सेर भर सीधा तो खाली ओकरे खातिर डला हलो। जेतना में अप्पन पूरा परिवार खा लेतो हल, ओतना ऊ अकेले चढ़ा लेलको हल। पेटू कहीं के!''

''बस कर बस! तोर भाय से तो कम्मे खा होवत। अब मेहमान के खाय पर टोका-टोकी करमें? अइसन दिन खराब हो गेल हे हमनी सब के ? आँय! हम भी

कहीं जा हिअइ कि नयँ? केतना खा हियइ, के जानऽ हइ ? कौन जानऽ हइ कि हमरो लौटे के बाद तोर भौजाई हमरा पेटू कहऽ होत ?''

''हमर घर वाला सब अइसन लंगटा नयँ हे। ''बिन्दा तमक के बोललक।

''तऽ हम लंगटा ही कि तू लंगटिनी हीं बोल! काहे करऽ हीं अइसन टीका-टिप्पनी?

''टीका काहे करबइ। केतना सौक से तो बढ़िया से पका के बनइलियो-खिलइलियो। बात पर बात निकसल, तऽ कह देली आउ का। पेटू तो हइये हथिन मेहमान। सबदगर भोजन मिले पर का ड्योढ़ो नय चढ़इलथिन होत। खा हलथिन आउ हमर मुँह देखऽ हलथिन।''

''हाँ, तऽ ई न बोल, कि तोर मुँहवा देख के ऊ ओतना ढेर मनी खा लेलकइ। तोर जइसन सुरतगर अगर सामने बइठल रहे, तऽ कौन मरद दुगुना नय खा जात।''

''चलऽ हटऽ। बड़ा अइलऽ हमर सूरत निहारे वाला। हम होबइ केकरो खातिर सुरतगर। तोहरा खातिर तो सूरत कहीं और बसऽ हे। मलिकवा के घरवा में कौन तोहरा भेली-गुड़ दे हो, हम का नयँ जानऽ ही?''

हिरवा आउ जोन्ही अप्पन-अप्पन गोदी में एक-एक गो कुतिया के पिलवा के टाँगले झोपड़ी के भीतर आ गेल। माय ऊ दुन्नो के खूब चेतइलक, लेकिन ऊ दुन्नो माय के कहना नय मानलक। पिलवन के माय भी दरवाजा से भीतरे झाँके लगल पूँछ डोलइते-डोलइते। नरम कूँई-कूँई से समूचा झोपड़ी भर गेल। हिरवा आउ जोन्ही

दुन्नो पिलवन के लेके भूट के सामने बइठ गेल। जोन्ही अप्पन गोदी के पिल्ला के भूट के आग में पकवल आलू खिलावे के कोसिस कइलक। पिल्लवा साहेब के जइसन अप्पन मुँह फेर देलक।

''अगे जोन्हिया, जा के अँगना में से आउ जडौंधा ले आव। भूट पफा रहलो हे।'' बिन्दा बइठल-बइठल हुकुम चलइलक।

जोन्ही गेल आउ अँगना में से थोड़ा सा जडौंधा ले आयल पानी में भींगल, ''माई गे, सभ्भे जड़ौंघवा एकदम्म ओद्दा हइ।''

ओद्दा जड़ौंधा के भूट के पास धर के ऊ फिर से कुतिया के पिल्लवा के गोदी में सम्हार लेलक। भूट से धीरे-धीरे धुआँ निकस के झोपड़ी में पसरे लगल।

हिरवा के बाबू उठ के बइठ गेल। कुछ सोच रहल हल ऊ। बिंदा उठके बरतन-बासन करे लगल।

मन ही मन दुन्नो परानी जोगाड़ सोच रहल हल खर्ची के। मालिक के हियाँ आज जाना ठीक नयँ हे। ससुरा सेर भर खर्ची का देत दिन भर के काम एरहा देत। फिन ई झपसी में ठिठुरइत-कलपइत परान देते रहे अदमी। आज तऽ चाहे जे हो जाय, काम पर नंय निकलत ऊ। बिंदा के अप्पन मन के बात बता देलक आउ पुछलक, ''एक्को छटाक भर चाउर नयँ हइ घरवा में?''

''छटाक भर काहे, आध सेर चाउर होतइ। लेकिन आध सेर चाउर से ही दुन्नो टैम के भूख मिट जइतइ का?''

''अइसन कर न, दुन्नो बुतरुअन खातिर गोलहत पका दे आउ दुन्नो के खिला दे।''

''आउ हमनी दुन्नो?'' बिन्दा बेबसी भरल निगाह से अप्पन मरद के देखइत असहाय जइसन पुछलक।

''अप्पन जुगाड़ देखऽ ही।'' कहलक हिरवा के बाबू आउ कमर में खोंसल चुनौटी निकाल के खैनी रगड़े लगल।

झँपसी तो अइसन कइले हलऽ कि मन कर रहऽ हल कि न हग्गे ला बाहर निकले पड़े न मूते ला। लेकिन दुन्नों संझा के कौरा के जुगाड़ तऽ करहीं पड़तइ।

खइनी निचला ठोर तर दबा के ऊ ओहारी तर गोड़कुनिये बइठ गेल। मौसम में फिसिर-फिसिर मचले हल। एकर परवाह कइले बिना बिंदा बरतन धो-खंघार रहल हल। ओक्कर अँचरा भींग चुकल हल। हिरवा के बाबू पच्च से थूक फेकलक आउ अँगना में भींग रहल जड़ौंधवन के उठा-उठा के ओहारी तर रखे लगल। का पता केतना रोज तक ई झपसी लगल रहत। बाँस के ई जड़ौंधा नयँ रहे, तऽ ई जाड़ा-पाला उठाइये ले जाय। केकरो फिकिर नयँ हे। एकरा निकाले में नानी याद आ जा हे। कुदारी, टंगारी, खन्ती सब जौर करऽ, तऽ जा के निकल हइ ई जड़ौंधा।

जड़ौंधा के ओहारी के नीचे रखके ऊ अप्पन कमर में गमछी बाँधलक, मानों अप्पन साहस बटोर रहल होय। फिर कुछ सोचइत खंती ले के बाहर निकल गेल।

बिंदा बरतन-बासन करलक, फिर झाड़ू-बहाड़ू करके आग सुलगावे चलल हल कि ओकरा याद पड़ गेल। ऊ किसुन मालिक के पुतोहू के आठ रोज तक हाथ-गोर में तेल मालिस करलक हल लेकिन चारे रोज के मजूरी मिलल हल ओकरा। चार सेर कच्चा अनाज अबहियो ओकरा हिंया बाकी हे। आखिर कौन रोज देत ऊ। मर-पभा जइबइ तब ? बाप रे बाप! तीन महिन्ना से ऊपर भे गेल। भादो के कादो-किच्चर में जा के तेल लगइली हल। आ सुसरी चार रोज के मजदूरी दे के कइसन गुम्मी मारले बइठल हे। हम तऽ भुलाइए गेली हल, तऽ उहो भुलाइये जायत का? अरे, ई मलिकवन सब के मेहररुअन के मनवां में जे बेइमानी रहऽ हे, ई हम खूब जानऽ ही! मजूरी दबा के पड़ल हे। भूल जाये, तऽ गेल मजूरी।

''अगेऽऽ जोन्हिया! जो तो किसुन मालिक के हिंया। ओकर पुतोहिया के आठ रोज तक तेल-मालिस कइली हल गे। चारा रोज के तेल-लगाई अभी बाकिये हे। जो तो ! कह निगोड़ी से! ई भुखमरी में भी देत कि पचाइए जात हम्मर बाकी मजूरी।''

''ई पिच्छुल में नय जाम हम! भइया के भेज दे।'' जोन्ही आँख मिचमिचा के कहलक।

''अगे मुँहझौंसी ! भइया के नानी। ऊ कुतिया के पिल्लवा के गोदी में काहे टाँगले-बुलल चल रहनहीं हें गे! भतार हउ का तोर? रक्खऽ हीं कि नयँ एकरा? पिच्छिल हऽ, तऽ मुँह में लेवा लगा के बइठ चुक्को-मुक्को। माँगमें न खाय ला, तऽ मुँहवा में छोलनी घुसेर देबउ, कह दे हियउ।''

हिरवा ई मौका के चारो तरफ से गमलक। किसुन मालिक के पुतहू इन्नर के परी हे ! खूब नीमन लगऽ हे देखे में। दुर्गा-देवी के मूरत जइसन। मन-मिजाज के खूब नीमन हे। गुड़ चाहे लाई जरूर देत।

लाई के याद अइतही ओकर मुँह में पानी भर गेल। माय के बोललक, ''मइया गे! हम जा हियउ। कहबउ कि मामू अइलथिन हे आउ घर में खरची नंय हइ। मइया दू सेर चाउर मँगलको हे।''

''दू सेर चाउर का भीख माँग रहली हे ? कहिहे, चार रोज के तेल-लगाइ बाकी हे।''

हिरवा जाय के पहले जोन्ही के कान में कुछ कहलक आउ तेजी से निकल भागल। जोन्हीं ठुनके लगल, ''अगे मइया, जोन्ही के लाई मिलतइ। हमहूँ लेबइ लाई!''

''अगे लाई के माय। अभी तो पिच्छुल सूफ रहलो हल अब लाई सूफे लगलउ। मारबउ एक फापड़ की पसर जयमें।'' बिन्दा बोललक।

हालाँकि ई कहते-कहते ओकरा हिरवा के उछाह के राज मालूम भेल, तऽ ऊ बेटा के सूफ-बूफ गम के मुस्काय लगल, ''अच्छा, ठुनक नंय। आवे देहीं हिरवा के। तोरा जइसन जीभ-चट्ट नयँ हइ कि अकेले-अकेले सब भकोस जाये।''

जोन्ही के भाय के आदत आउ माय के सबुर करावे पर भरोसा भेल आउ ऊ ठुनकना बंद करके माय के पुछलक, ''माय गे, फाड़ू लगा दियउ?''

''बहारलके के बहारमी न ? तखनी से तो पिल्लवा में लगल हीं। सगरो फाड़-बहार लेली, तऽ बहारे आयल हे! अँखिया फुट्टल हलउ का, जखनी हम्मे बहार रहलियो हल ?'' बिन्दा हनहनाये लगल।

माय-बेटी भूट के पास बैठ गेल। माय आग खोरे लगल। बेटी एगो आउ ओहा जड़ौंधा डाल देलक भूट में। खूब गाढ़ा धुआँ होवे लगल।

''तन्नी सा चपुआ ला के डाल दिअउ गे मइया?'' जोन्ही डरते-डरते बोललक।

''डाल दे।'' माय के भी आग के गरज हल।

जोन्हीं कुछ जादे चपुआ ले आयल हल। माय-बेटी ओकरा भूट में डाले लगल जइसे पंडीजी जग्य में हविस डालऽ हथिन। •

हिरवा खूब भरल-पूरल लउटल। ओकर पोटली में चाउर, आलू, लाई तो हइये हल, तीन-चार ढेला गुड़ भी हल। हिरवा बतयलक कि कनिया माय लुका के देलक हे आउ कहलन हे मइया के कह दीहें कि एतवार के चल आवे तेल मालिस करे खातिर।

बिन्दा सब चीज के तजबीज के देखलक। जोन्ही, बोललक, ''अलुआ तऽ सेर भर से कम नय होतइ गे मइया।''

माय ओकरा फिड़क देलक, ''अनजोखे खाय, माँदल गाय। कइसन होव हउ गे तोर सेर ? अंधरी, ई दू सेर से उप्पर हइ। चउरवो भी जादा हइ।'' फिन हाथ में ले के चाउर के किसिम पहचानलक। फटकल-बनावल चाउर हल। बोललक, ''बेचारी, जइसन तन के सुन्दर हइ, वैसही मनवो के सुन्दर हइ !''

हिरवा अप्पन धोकरी में से एगो चीज निकाललक आउ जोन्ही के चुपके से देखयलक। जोन्ही गियारी फाड़ के चिल्लयलक, ''अगे मइया, ऊ देख। भइया करिया लड्डू लेले हउ।''

बिन्दा हिरवा के डपटलक, ''ऊ का हइ रे ! आव एन्ने ! केतना बार कहलियो हे कि केकरो हियाँ से कुछ मिले, तऽ पहिले हमरा देखा लेले कर। जोग-टोटरम करे वाला कम नय हे गाँव में।''

जोग के नाम सुन के हिरवा डर गेल। पिछला साल ही तो एही जोग-टोग के कारन ओक्कर साथी बंगट बस दिन भर के बेमारी में ही टप से मर गेल हल। माथा के बुखार के हल्ला हल खाली। लेकिन मइया कहऽ हल कि ओम-टोम करके कुच्छो खिला देलक हल ओकरा कोय।

हिरवा दुनू लड्डू माय के सामने धर देलक। माय दुन्नो लड्डू में घुन्नी-घुन्नी भर खोंटलक आउ अप्पन मुँह में डाल लेलक। जीभ के बोललक, ''मेथी के लड्डू हइ। कनीयवां के नैहर से आयल होत। किसुना बहू के कोई लूर कन्ने से आवत!''

बिन्दा तय करलक कि का पकावे के हे। आलू-सीम के तरकारी आउ भात ! हिरवा के बाबू अयतन त केतना खुस होतन। आज रात के जे एक किनारे दीवार दने मुँह करके सुततन, तऽ कल्हे उपास नंय करा देलियइ, तऽ फिन का!

ऊ चूल्हा सुलगा देलक आउ ओकरा पर भात के हाँड़ी चढ़ा देलक आउ जोन्ही के बोललक, ''बैठ के सीम तोड़।''

भात पका के रख देलक हल आउ चूल्हा पर सीम के तरकारी खदक रहल हल तबहिएँ हिरवा के बाबू सिकंदर जइसन सीना तानले बजनगर डेग भरते-भरते झोपड़ी में ढुकल। ऊ बहुत खुस हलन। खरिहान में ऊ आठ गो मोटा-मोटा चर्बीआयल करौसा चूहा मारलक हल आउ अप्पन गमछा में बाँध के लयलक हल।

घर में भात आउ तरकारी के मिलल-जुलल मादक गंध पसरल हल। कोना में पड़ल चाउर आउ आलू के देखतही बाबू के घर के हाल मालूम हो गेल।

जोन्ही आउ हिरवा खुसी से किलके लगल, ''मूस-मूस''।

तरकारी आउ भात के गंध सूंघ के हिरवा के बाबू के खुसी के ठिकाना नय रहल। अचरज से ऊ बिंदा के पूछलक, ''कइसे जोगाड़ करनहीं! हम तो सोचलियो हल कि नय कुछ जोगाड़ होवत, तऽ हमनी सब ई चुहवे के पका के खा लेम।'' ऊ मरल चुहवन के गमछी में बाँधले नीचे रखलक।

हिरवा आउ जोन्ही चूहा पकावे के जोगाड़ में लग गेल। ऊ दुन्नो के नाक में आग में पक रहल चूहा के सोंधा-सोंधा महक अबहिये से भरे लगल हल।

बिंदा अप्पन मरद के आँख में आँख गड़यलक।

वहाँ जुड़ायल मन के भाव कातिक महिन्ना में भरल पोखरा में मुड़ी उठइले भेंट के उज्जर फूल समान पवित्तर रहस्य पछाड़ खा रहल हल।

ऊ तन-मन से मुस्कयलक। मरद निहाल हो गेल।

अभ्यास-प्रश्न

1. मौखिक :

1. बिंदा मन मसोस के काहे उठलक?

2. बिंदा फिन बिछौना भिर काहे लौट आयल?

3. बिंदा के समूचा परिवार पोआर पर गेदरा में लिपटल सूतल-परल काहे हल?

4. निरगुन के पंक्ति काहे कुम्हला के रह गेल?

5. बिंदा हिरवा बाबू के सूतल देख के मने-मने का सोचलक?

6. हिरवा अचानक फुरती से गेन्दरा फेंक के काहे खड़ा भे गेल ?

7. जोन्ही हिरवा के कान में का बोललक?

8. तीन दिन झपसी लगल के का परभाव दिखाई दे रहल हल?

9. पेटू केकरा कहल गेल आउ काहे?

10. मन ही मन दुनो परानी जुगाड़ करेला का सोच रहल हल?

11. बिंदा बेटा के सूझ-बूझ गम के काहे मुसकाए लगल?

12. बिंदा काहे हनहनाय लगल?

13. बिंदा जोग टोटरम से डरेला काहे कहलक?

14. बिंदा कउची पकावे ला तय कयलक?

15. जोन्ही आउ हिरवा खुसी से काहे किलके लगल?

2. लिखित :

1. कहानीकार के परिचय दऽ आउ उनकर दू गो रचना के नाम बतावऽ।

2. (क) जोगाड़ कहानी के सारांस संछेप में लिखऽ।

   (ख) 'जोगाड़' के जगह कहानी के आउ कउन सीर्सक हो सकऽ हे ।

3. कहानी में कउन समाज के चित्रन कयल गेल हे?

4. पूस महीना के बरनन करऽ।

5. कहानी के नायिका के हे? ओकर चरित्र चित्रन करऽ।

6. 'हिरवा के जीवन गरीबी के दुख दर्द से भरल हे।' ई बात के परमान दऽ।

7. गरीब अप्पन जिनगी कइसे काटऽ हे। एगो अप्पन मित्र के पास पत्र लिखइत ई बात के चर्चा करऽ।

8. गरीब के जिनगी पोआर के नीचे गेंदरा में लिपटल रहऽ हे, ई बात के कहानी के अधार पर समझावऽ।

9. बिंदा आउ हिरवा के प्रेम भरल परिवारिक जीवन के बरनन करऽ।

10. आज हमनी के समाज में हिरवा आउ बिंदा के परिवारिक जीवन काटे वाला मौजूद हथ। ओकरा पर एगो बातचीत लिखऽ।

11. कहानी के तत्व कउन-कउन होवऽ हे ? ऊ तत्व के आधार पर 'जोगाड़'? कहानी कहाँ तक सटीक है, बतावऽ।

12. हिरवा आउ बिंदा के बातचीत अपना सबद में लिखऽ।

13. जोगाड़ कहानी से का संदेस मिलऽ हे?

3. नीचे लिखल गद्यांस के सप्रसंग व्याख्या करऽ :

(क) अँगना में रोपल सीम के लत्तर से टपटप पानी चू रहल हल।

(ख) ऊ मने मन एगो एकदम घिनायल गारी निकासलक आउ गिरह पार लेलक कि चाहे जे हो जाए पहर भर त ऊ नहिए उठत।

(ग) सउँसे गिरहथ टोला में मलिकार जइसन एक्को अदमी नयँ हथिन।

4. नीचे लिखल पंक्ति में छिपल भाव के बतावऽ:

(क) ई मुहफौंसा फपसी में नयँ मालूम की हाल हो रहल होत ऊ अँखमुन्ना पिल्लन सबके।

(ख) उनकर सबके अवाज भी एतना थकल पभायल हल मानो ऊ सब भी अँधुआ रहल होय।

(ग) ऊ अपन कान से ही दुनिया के हेस नेस लेलक आउ गेंदरा के भूगोल बदल के सिमट गेल।

(घ) मलिकार के खरिहान में पहुँचे के पहिले ओकरा पहुँच जाए के चाहीं।

(ङ) ऊ आग जलावेला दियासलाई खोज रहल।

(च) बिंदा के मन मरद के खातिर नेह से भर गेल।

(छ) हिरवा जाए के पहिले जोन्ही के कान में कुछ कहलक आउ तेजी से निकल भागल।

(ज) हम तो सोचलियो हल कि नय जुगाड़ होबत।

5. **भासा-अध्ययन :**

(क) कहानी के सिल्प-सौंदर्य बतावऽ।

(ख) कहानी में आयल बिसेसन सबद के चुन के एगो सूची बनावऽ।

(ग) नीचे लिखल सबद के पर्यावाची सबद बतावऽ :

अँगना, झोपड़ी, संदेस, मलिकार, मेहमान, मरद

(घ) नीचे लिखल मुहावरा के वाक्य में परयोग करके अरथ बतावऽ :

हड्डी के भीतर छेद कर देना, चक्कर मारना, आँख बचाना, मुँह देखके भीतर झाँकना।

(च) पाठ से सहचर सबद चुनके लिखऽ।

नीचे लिखल के बतावऽ कि कउन समास हे :

दसकट्ठा, गिरहथ टोला, टीका-टिप्पनी, अनचिन्ह, मरद-मेहरारू, झाड़ू-बहारू।

6. **योग्यता-विस्तार :**

(क) 'जोगाड़' कहानी से मिंलइत-जुलइत एगो कहानी चुन के लावऽ आउ कलास में सुनावऽ।

(ख) गँवई जीवन पर एगो परिचर्चा के आयोजन करऽ जेकरा में सामाजिक जीवन के बरनन करऽ।

सब्दार्थ :

झपसी	:	बादल से घिरल अकास
इँजोर	:	उजाला
रोपल	:	पउधा गाड़ल
गेंदरा	:	गुदर से बनावल बिछौना
टंगरी	:	पैर

कुम्हलाना	:	मुरझाना
निफिकिर	:	बिना चिंता के
अक्किल	:	बुद्धि
उछाह	:	खुसी, उमंग
पक्कल	:	पकावल, आग में भूनल
छोह	:	सनेह, प्यार
पेटू	:	खूब खायवाला
लंगटिनी	:	बदमासिन
सबदगर	:	स्वादिस्ट
सुरतगर	:	सुंदर

●